**EURASIAN JOURNAL OF LITERATURE AND LANGUAGES** **ISSN(o): 2584-1734**
**International Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal**
**Volume - 1, Issue - 1, December - 2023**

DOIs:10.2023/EJLL/202301005 --:-- Research Paper / Article / Review

# मनोविश्लेषणात्मक संस्मरण अध्ययन' : 'मैं ने मांडू नहीं देखा'

**भूमि पांचाल**
भाषा अध्ययन (स्नातकोत्तर), मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

Email – panchalbhumi144@gmail.com

Psychology का पर्यायवाची शब्द है। ग्रीक भाषा के psychos और logos शब्द युग्मों से बना हुआ Psychology का अर्थों मो सिझां, मर का विशिष्ट, आत्मा का कारात. रामचंद्र वर्मा के अनुसार मनोविज्ञान वह विज्ञान या शास्त्र है जिसमें मनुष्य के मन, उसकी विभिन्न अवस्थाओं तथा क्रियाओं, उस पर पड़ेनवाले प्रभावों आदि का अध्ययन तथा विवेचन होता है।[1] जयश्री शिंदे के अनुसार - "मन अदृश्य है, अस्पष्ट है। णवं अनुमामित है। मनुष्य के व्यवहार से लगता है। इसका विम्लेषक जो विज्ञान है उसे मनोविज्ञान कहा जाता है। [2] अर्थात मनुष्य के व्यवहार से उसके मन की स्थितब कम विवेच॰ कममा ही मड़रड़तड़मड़त है। आधुनिक मनोविज्ञान एवं चिकित्सा के क्षेत्र में सिग्मंड फ्रायड ने मनोविश्लेषण सिद्धांत के आविष्कार से जो योगदान दिया है, वह मनोविज्ञान के इथिहास का महत्वपूर्ण अध्याय है।

स्वदेश दीपक का आत्मकथात्मक संस्मरणों पर आधारित किताब है 'मैं ने मांडू नहीं देखा'। यह पहले कथादेश में 'खण्डित जीवन का कोलाज' नाम से धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था। इसमें स्वदेश दीपक ने अपने मनोरोग की अवस्था को बडी तटस्थता से अभिव्यक्ति दी है। इसमें कहीं स्वदेश एक पात्र बन जाते हैं और कहीं भुक्तभोगी बन जाते हैं। उन्हें बाईपोलर सिंड्रोम नाम की मानसिक बीमारी थी। इस बीमारी से त्रस्त व्यक्ति में संवेदनशीलता का स्तर तीव्रता से घटता-बढ़ता रहता है। सात साल तक स्वदेश को उस दुनिया में जीना पड़ा था, अपनी संवेदनशीलता बिल्कुल खोकर। इसके बाद उन्होंने अपने परिवारवालों, दोस्तों और डॉक्टरों की सहायता से इन सात वर्षों के अनुभवों को समेटने की कोशिश की। इससे पहले किसी ने इस तरह की रचना नहीं की है।

स्वदेश की रोगावस्था में उसका साथ देनेवाले व्यक्तियों में महत्वपूर्ण हैं उनकी पत्नी गीता और उनका प्रिय मित्र विकासनारायण। इन दोनों ने ही स्वदेश को इस भयानक बीमारी से लौट आने की मदद दी। बाईपोलर सिंड्रोम की अंधेरी खाइयों से बाहर निकलना आसान नहीं है। इन खाइयों से स्वदेश बाहर आये ही नहीं उन्होंने अपने साहित्यिक दुनिया में लौट आकर उन सात सालों के अनुभवों को समेटा और उन अनुभवों को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया।

'मैं ने मांडू नहीं देखा' संस्मरण परिवार संबंधी है। स्वदेश की पत्नी गीता सहनशील व्यक्तित्व रखनेवाली है। वह स्वदेश का सहारा बनकर उन्हें अपनी ज़िंदगी में वापस लाने की कोशिश करती है। स्वदेश पूरे सात साल मनोरोग से पीड़ित हुए थे। तब भी गीता एक माँ की तरह उनका देखभाल करती है। तीन बार आत्महत्या करने की कोशिश करनेवाले स्वदेश से वह हमेशा कहती है तुम्हें वापस आना ही होगा, तुम्हें मैं मरने नहीं दूँगी। इन शब्दों को पकड़कर स्वदेश वापस आते हैं। पति-पत्नी और बच्चे जब तक एक साथ और एक मन होकर जीते हैं तब तक परिवार बना रहता है। जब इनके बीच का संबंध टूटता है तब परिवार भी टूटता है। पारिवारिक विघटन के अनेक कारण हो सकते हैं। कभी-कभी पति या पत्नी के विवाहेतर संबंध से पारिवारिक विघटन हो जाता है। पति या पत्नी की रोगावस्था भी पारिवारिक विघटन का कारण बन सकता है। लेकिन यहाँ गीता जानती है स्वदेश का वापस आना मुश्किल है, फिर भी वह अपना हौसला बढ़ाते हुए उन्हें ज़िंदगी में लाने की कोशिश करती रहती है।

स्वदेश ने प्रस्तुत संस्मरण में यौन संबंध के बारे में अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है। वे अपनी पत्नी के बगैर किसी दूसरी स्त्री से संबंध नहीं रखते हैं। किंतु उनके मन में कुछ स्त्रियों के प्रति आकर्षण ज़रूर है। आजकल काम विषयों की चर्चा रहस्यपूर्ण ढंग से तथा लुके-छिपे न होकर निस्संकोच तथा अन्य बातों की तरह साधारण खुले रूप से होती है। किंतु स्वदेश अन्य स्त्री से अपने संबंध को न गीता से कहते हैं न डॉक्टरों से। किंतु अपने संस्मरण में उन्होंने सभी बातों को खुलकर लिखा है। आधुनिक युग की अतिबौद्धिकता और जडत्व यौन गोपन को बढ़ावा देती है। सेक्स शब्द द्वारा यौन-भाव का अर्थ सूचित होता है। स्वदेश ने इस नवीन सेक्स चेतना को अपने कथानकों का आधार मानते हुए कई स्तरों पर रूपायित किया है।

स्वदेश दीपक अपनी पत्नी के बगैर और किसी स्त्री से कुछ संबंध नहीं रखते थे। इतना ही नहीं वे खूबसूरत औरतों से घृणा भी करते थे। यदि कोई सुंदर स्त्री उनसे दोस्ती करने के लिए आयी तो वे उसका सभी लोगों के सामने अपमानित करके भेज देते थे। उनका कहना है – "खूबसूरत औरतों से तब मेरा रण ठना रहता था। उन्हें पराजित करने का कारगर तरीका... औरों के सामने अपमानित करना। एक कमीनी रणनीति-हिटिंग बिलो द बेल्ट।"3 पर कोर्टमार्शल के पहले मंचन के बाद एक मायाविनी स्त्री को अपमानित करके अपने से दूर करने की कोशिश की तब से उन्हें पता चला कि उनका यह स्वभाव अच्छा नहीं है, इसे बदलना ही होगा, क्योंकि इसी एक घटना की वजह से उन्हें सात साल तक मनोरग से पीड़ित होकर अपने को छुपाकर स्वयं बंदी बनकर जीना पड़ा। स्वदेश ने अपने रोग को ही मायाविनी माना है। इसलिए उस मायाविनी को स्वदेश के बगैर और कोई देख नहीं सकता था, सिर्फ एहसास कर सकता था।

मनोरोग से पीडित उन सात सालों में स्वदेश ने केवल एक व्यक्ति से दोस्ती की है, वह है मायाविनी। स्वदेश हमेशा मायाविनी को अपने साथ रखते हैं। इस दोस्ती के बारे में किसी से कहते भी नहीं, न गीता से या डॉक्टरों से। उन्हें मायाविनी को अपमानित करने की बात कचोटती रहती है। उस दिन यदि मायाविनी से दोस्ती की होती तो सात साल इस तरह अपनी ज़िंदगी से पूरी तरह कटते नहीं। अब तो बूढा हो गया है। किसी हसीन से दोस्ती करने का उम्र तो निकल चुका है। वे सोचते हैं – "मेरा टौड़ा-चमकता माथा त्रासद भविष्य की भविष्यवाणी बन जाएगा। तब मैं नहीं जानता था। मैं एलियट का बूढ़ा बन जाऊँगा। सूखा पड़ गए महीने में जिसके लिए एक लड़का कविता पढ़ेगा। वर्षा की प्रतीक्षा की कविता। तब मैं नहीं जानता था।"4 उन्हें अपने किए पर अब पछतावा हो रहा है। इसलिए वे इस युवती से दोस्ती कर लेते हैं औऱ हमेशा साथ लेकर चलने लगते हैं। उसके सामने हताश होकर अपने अस्तित्व को गिरवी रखते हैं, सात साल तक।

स्वदेश समस्याग्रस्त जीवन के बीच भी जीवन के अर्थ की खोज करते हैं। उन्होंने अपने संस्मरण मैं ने मांडू नहीं देखा में खुद का मनोविश्लेषण किया है। संस्मरण में चित्रित अन्य सभी पात्र साधारण है। मनोरोग से ग्रस्त स्वदेश अपने घर में समाज से हटकर अपने दोस्तों से कटकर सात साल जीते हैं। इस समय वे कई समस्याओं से जूझ रहे हैं।

स्वदेश दीपक सामाजिक रूढियों का पालन नहीं करते हैं। उन्होंने रूढिमुक्त पात्र के रूप में अपना चित्रण किया है। इसी रूढिमुक्तता के कारण स्वदेश आत्महत्या करने के लिए तैयार हो गए होंगे। वे अपने समाज से कटकर रहना चाहते हैं। लेकिन कभी-कभी कायदे से उन्हें देखने आते हैं। स्वदेश इस कायदे से नफरत करते हैं। उन्हें अपने दुर्दिन के अवसर पर दूसरों के सामने अपने को प्रस्तुत करना बुरा लगता है।

आर्थिक अभाव और बेरोज़गारी की वजह से अनिश्चित जीवन का संत्रास कहीं कहीं संस्मरण में मिल जाता है। स्वदेश की ज़िंदगी घर के चारदीवारों में या अस्पताल में बीतने लगती है। स्वदेश एक कॉलेज प्रोफसर थे। उन्हें मनोरोगी होने से पहले अर्थाभाव नहीं सहना पडा था। रोगग्रस्त होने पर वे कॉलेज जा नहीं पाते हैं, उनकी नौकरी चली जाती है। तब गीता को नौकरी करने जाना पड़ता है। पत्नी के आय से घर का खर्च चल रहा है। पच्चीस साल तक काम करने के बाद भी स्वदेश को आर्थिक अभाव सहना पड़ रहा है। अब उनके पास कुछ भी बचा नहीं है। स्वदेश का मन कुंठाग्रस्त है। कुंठा मनुष्य की तृप्त या अतृप्त दोनों भावनाओं को आगे बढ़ाने में बाधा बन जाता है। स्वदेश अपने रोग की अवस्था में तीन बार आत्महत्या करने की कोशिश करते हैं।

संत्रास के कई रूप हैं। इनमें एक है रुग्णताजन्य संत्रास और अतीत के संत्रास। अतीत के संत्रास से संत्रस्त पात्र हैं स्वदेश दीपक। कोर्टमार्शल के पहले मंचन के बाद स्वदेश एक सुंदर युवती से मिलते हैं। वह उनके साथ मांडू देखने की आशा प्रकट करती है। स्वदेश सुंदर युवतियों से पहले ही घृणा करते थे। उन्होंने उसे "ध्यान से देखा। सूर्य रात को उदय हो गया। साक्षात् सूर्य – नारी शरीर आकृति में।"5 स्वदेश सबके सामने उसका अपमान करते हैं। उसे दूर भगा लेते हैं। पहली बार उनकी रोगावस्था तभी बाहर दिखाई पड़ती है। उस दिन से लेकर वह सात साल तक स्वदेश का साथी बन जाती है। उस मायाविनी की पकड़ से वे बाहर नहीं निकल पाते हैं।

प्रस्तुत संस्मरण में जीवन की विकृतियों – मनोजन्य और परिवेशजन्य – का मनोविश्लेषण बहुत सफलतापूर्वक हुआ है। मनस्नायु विकृति से ग्रस्त स्वदेश मानसिक एवं स्नायु संबंधी विकृतियों से पीड़ित होकर हमेशा अस्वस्थ रहते हैं। मनस्नायु विकृति से ग्रस्त व्यक्ति जीवन की साधारण कठिनाइयों का सामना करने से हिचकिचाते हैं। चिंता, संघर्ष, भय, तनाव आदि के कारण मानसिक और शारीरिक समस्याओं से वे उलझे रहते हैं। इसका उत्तम उदाहरण है स्वदेश की ज़िंदगी। मायाविनी से बातें करते-करते स्वदेश दिन बिताते हैं। कभी-कभी उससे बातें करते ही सीमातीत डर की खाई में वे डूब जाते हैं – "मेरे डर की कोई दिशा, न कोई सीमा। डर ने साक्षात् शरीर धारण कर लिया। अब शेष जीवन क्या किसी न किसी का हाथ पकड़ चलना होगा। पृ.190 स्वदेश का भय जीने के लिए ही है, मरने के लिए भय नहीं है। इसलिए वे तीन बार आत्महत्या की कोशिश करते हैं। आत्महत्या के बारे में डॉक्टर के पूछने

पर उसका उत्तर है – कंटीले तारों के उस ओर शरीर-मुक्ति है।"6 वे शरीर से मुक्त होकर अपनी इस भयावह ज़िंदगी से बाहर निकलना चाहते हैं। इसलिए तीन बार आत्महत्या की कोशिश करते हैं।

स्वदेश होश आने पर डॉक्टर से बातें करते रहते हैं। एक बार उन्होंने डॉक्टर से अपने रोग के बारे में पूछा तो डॉक्टर ने उत्तर दिया – "साइकिएट्री में हम रोग का नाम नहीं बताते। बस, मानसिक रोग काफी है। आपके केस में व्यक्तित्व दो हिस्सों में बँट गया है। एक हिस्सा दूसरे हिस्से का कहा नहीं मानता। तब हम दिशाहीन हो जाते हैं। जो अपने हैं, उनसे मिले, बातें करने से नफरत हो जाती है। हम एक लगातार भय में रहते हैं। सब कुछ लम्बा दुस्वप्न। तब हमारे पास कोई दूसरा आकर बेठता है। हम उससे बातें करते हैं।"7 स्वदेश मायाविनी से बातें करते हैं। उनके लिए वह मायाविनी सच है।

बाध्यता से त्रस्त व्यक्ति के बर्ताव में कुछ विचित्र क्रियाएँ दिखाई देती हैं। बार-बार हाथ थोना, पुन पुन उँगलियाँ गिनना, बार-बार पीछे मुड़कर, अकेले में बात करना देखना आदि। यहाँ स्वदेश दीपक अकेले बात करने की आदी है। उन्हें लगता है मायाविनी उनके अकेले रहते समय पास आकर बेठती है और बातें करती है।

मनोविकृति से ग्रस्त व्यक्ति को यथार्थबोध नहीं होता और उसका व्यक्तित्व विघटित हो जाता है। ऐसे लोग कल्पना जगत में विचरण करनेवाले होते हैं। इसके दो लक्षण हैं व्यामोह और विभ्रम। व्यामोह भी दो प्रकार के हैं – महानता व्यामोह और उत्पीड़न व्यामोह। मायाविनी के प्रसंग से ही पता चलेगा कि स्वदेश में मनोविकृति है, क्योंकि वे मायाविनी को इच्छानुसार चलनेवाली समझते हैं। वह भी बंद दरवाज़े को चीरकर, देश-विदेश कीपरवाह किए बिना वह चल सकती है। पर स्वदेश के सिवाय न कोई उसे देख सकता है न सुन सकता है।

स्वदेश की आंगिक चेष्टाएँ अस्वाभाविक एवं असामान्य हैं। वे कभी-कभी कोर्टमार्श के कर्नल बन जाते हैं तो कभी किसी कहानी के पात्र बन जाते हैं। कभी-कभी ज़ोर-ज़ोर से अंग्रेज़ी में गाली देने लगते हैं। प्रस्तुत संस्मरण में विविधमुखी पीडा का चित्रण भी विद्यमान है। अकेलेपन की पीडा, मोहभंग की पीड़ा, अस्तित्वबोध की पीड़ा, मानसिक पीड़ा, बेरोज़गारी की पीड़ा, काम अतृप्ति की पीड़ा, असफल प्रेम की पीड़ा आदि इनमें प्रमुख हैं।

दुर्भीति भय का एक रूप है। अंधेरी रात के अकेलेपन और विकरालता उन्हें भयग्रस्त कर देती है। अस्पताल के एंबुलेंस की आवाज़ भी उनमें डर पैदा करती है। स्वदेश का कहना है – मैं आदमी से लोथ में बदलना शुरू तब हुआ, जब पहली बार वह गर्मियों की दोपहर में मेरे घर आई, मेरे कमरे में बिस्तर के पास रखी कुरसी पर बैठ गई, न राम-राम, न नमस्ते। सिर सफेद साड़ी से ढाँपा हुआ और बैन, शोकगीत गाना शुरू हो गई। मैं ने उसे रोने से रोका नहीं। औरतों के संदर्भ॰ में एक ताकतवर आदमी जिसका नाम है – "स्वदेश दीपक। जब पता चला कि यह शोकगीत मेरी मौत का है, तो मैं ने चीखा। बिस्तरे से बरामदे में आया।"8 एक ओर स्वदेश मृत्यु को वरण करना चाहते हैं दूसरी ओर वे मृत्यु से डरते भी हैं। एक ओर स्वदेश मायाविनी से डरते हैं तो दूसरी ओर उसे हमेशा साथ रखना चाहते हैं – "प्लीस स्टे विद मी। मुझे डर लगता है।"9 मायाविनी से जुड़कर स्वदेश का भय है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति अकारण बीमारी, अस्वस्थता तथा थकान की शिकायत करता रहता है। स्वदेश भी इससे भिन्न नहीं हैं। मगर उन्हें एक ही शिकायत है कि वे लिख नहीं पाते हैं। अक्षर और शब्द उनसे दूर होते जा रहे हैं। वे लिख नहीं पा रहे हैं। भाषा छूट रही है।

स्वदेश मानसिक पीडा से ग्रस्त पात्र हैं। वे कभी अकेले नहीं होते हैं, फिर भी वे अकेलेपन से भी त्रस्त हैं। उन्हें अपने साथी के रूप में और कोई नहीं चाहिए, सिर्फ मायाविनी ही चाहिए। मायाविनी के साथ वे खुश हैं, बाकी सभी के साथ वे अकेलेपन महसूस करते हैं। पच्चीस साल काम करने के बाद अब स्वदेश बेरोज़गारी की पीड़ा सह रहे हैं। उन्हें अपनी नौकरी से इस्तीफा देना पड़ा था। इन पीड़ाओं से त्रस्त होकर स्वदेश में स्वपीड़न की प्रवृत्ति भी आ जाती है। तीन बार आत्महत्या की कोशिश इसमें एक है। वह भी अपने को दर्द देते हुए। तीसरी बार जब शरीर में आग लगाकर आत्महत्या करने की कोशिश की तब उसका शरीर आधा से ज़्यादा जल गया था। वे सोच रहे हैं मरने के बाद दर्द ही नहीं होगा, फिर मरने के लिए कुछ दर्द तो सहन कर सकता है।

स्वदेश एक लेखक हैं। एक लेखक के लिए अपने जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कार्य लेखन ही है। मनोरोग से ग्रस्त होने के कारण स्वदेश की भाषा नष्ट होने लगती है। इससे उनका मन द्वंद्व से भर जाता है। वे सब कुछ भूलने लगते हैं – "वक्त आया कि आया। अपने ही घर का पता भूल जाऊँगा। ज़िंदगी की हर सुबह लहूलुहान हो जाएगी। सात सालों के लिए। अपने पर तक शक करने लगेंगे। मेरा सब कुछ झूठ। यह सच क्योंकर बता पाऊँगा कि एक मादा अहेरी ने मेरा आखेट कर डाला और देदी सात साल लंबी मौत, मेरा अहंकार। बन जाऊँगा एक युद्धबंदी। जनेवा कन्वेंशन काकोई भी युद्धबंदी नियम मुझ पर लागू नहीं होगा। ह्यूमन राइट्स वालों के पास अपनी शिकायत भी दर्ज नहीं करा सकूँगी। कुछ दंड चुप-चाप भोगने होते हैं।"10

अपराधग्रंथि का प्रभाव भी स्वदेश में है। उन्हें अपने किए पर पश्चाताप है। मायाविनी के प्रति जो प्रेम है उसकी अभिव्यक्ति वे नहीं कर पाते हैं। इसके प्रति स्वदेश के मन में अपराधबोध है। इससे उनमें अपराध ग्रंथि उत्पन्न हो जाता है। उन्हें लगता है कि हमेशा वह मायाविनी उनके पास रहती है। यदि नहीं रहती तो भी वे उसके साथ रहना पसंद करते हैं – "क्या तुम्हारा होना एक ट्रिक है... सिर्फ छलावा... एक सघन गुफा में रहेंगे... तब कुछ भी जानने की ललक नहीं रहेगी... एक दूसरे को पुरानी गाथाएँ सुनाएँगे... गुफा के बाहर हवा मैदान बनाती रहेगी... मैं फिर लंबी कहानियाँ शुरू करूँगा... गले की हड्डी के पास बने टेढे होंठ रख तुम्हारा तापमान जाँचूँगा... फिर हम दोनों हरियाली छिड़केंगे... तुम हाथ बाँद कहोगी, मुझ पर गुस्सा करो स्वदेश... मैं एकदम ठंडी... मैं चंद्र पुरुष... नहीं करूँगा गुस्सा। तुम्हें जी भर सताऊँगा। तब भाषा शश्राकर गुफा के बाहर चली जाएगी। हमारे शरीर एक दूसरे से बातें करेंगे... तुम सुख सिसकारियाँ भरोगी... हो सकता तुम पिंजरा खोल मुझे उड़ जाने दो... लेकिन उडूँगा नहीं... तुम्हारा कारागर सुखद है... क्योंकि तुम्हारा शरीर इसका प्रहरी... शरीर भाषा कोई व्याकरण नहीं होता।"11

निष्कर्षत कहा जा सकता है कि स्वदेश दीपक के मैं ने मांडू नहीं देखा संस्मरण में सामान्य और असामान्य जीवन मूल्यों की विकृतियाँ स्पष्ट रूप से चित्रित हैं। इसमें स्वदेश ही ऐसे पात्र हैं जिन्हें मनोरोग है, यानी मनोविकृतियों से ग्रस्त एक ही पात्र पूरे संस्मरण में आ जाते हैं। इसलिए सभी मनोविकृतियों का विश्लेषण एक ही पात्र को रखकर किया गया है। प्रस्तुत संस्मरण के मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए स्वदेश दीपक की पूरी ज़िंदगी की जानकारी आवश्यक है क्योंकि यह असल में स्वदेश की आत्मकथा ही है। उन्होंने अपनी आत्मा का विश्लेषण इसमें किया है। इसमें सभी मनोविकृतियों का सम्मिश्रण हुआ है। लेखक मनोरोग की पीडा से संत्रस्त होकर सात साल तक जिए। इससे उबरने की शक्ति उन्हें अपने परिवार के सदस्यों और मित्रों से मिली। इस रोग से पीड़ित एक भी व्यक्ति अपनी ज़िंदगी में पूरी तरह वापस नहीं आ पाता है। पर स्वदेश इससे बचकर साहित्यिक क्षेत्र में अपना जो स्थान है उसे बरकरार रखने में समर्थ निकला है।

**संदर्भ सूची:**

1. डॉ.जयश्री शिंदे, मनोविज्ञान के कटघरे में हिंदी कहानी, पृ.9
2. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.45
3. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.43
4. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.40
5. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.208
6. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.196
7. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.148
8. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.22
9. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.42
10. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.182
11. मैं ने मांडू नहीं देखा, पृ.21